3

वश में शक्ति

(मत्ती 5:5)

क्या आप असहनशील, दबंग या जल्दी क्रोध में आने वाले हैं? तो फिर सुनें कि यीशु अतिरिक्त खुशी की तीसरी शर्त क्या बताता है: ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (मत्ती 5:5)। बहुत से लोग KJV के अनुवाद ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' से परिचित होंगे।[1]

इस संसार में दीन और नम्र होने को इतना महत्व नहीं दिया जाता। संसार के धन्य वचन तो इस प्रकार हैं: ''धन्य हैं वे जो अपने दावे पर कायम रहते हैं, क्यों उनको उनका हक मिलेगा''; ''धन्य हैं वे, जो अपने आप को बढ़ाते हैं, क्योंकि लोगों का ध्यान उन पर जाएगा''; ''धन्य हैं वे जो लड़ाके हैं, क्योंकि उन्हें सफलता मिलेगी।'' तौ भी यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।''

उस प्रतिज्ञा का अन्तिम भाग ''वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे,'' कई कल्पनाओं को जगाकर काफी विवाद का कारण बना है। यीशु के यह कहने का क्या अर्थ था कि दीन और नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे? इसके अलावा दीन और नम्र होने का हमारे प्रसन्न होने से क्या सम्बन्ध हैं? पाठ में हम इन्हीं प्रश्नों पर विचार करेंगे।

''धन्य हैं वे जो नम्र हैं ...।''

व्याख्या

पहले तो हमें NASB में ''gentle'' और KJV में ''meek'' अनुवाद हुए शब्द का बाइबली अर्थ तय करना होगा। इस शृंखला की पिछली प्रस्तुति के विपरीत हम सकारात्मक से आरम्भ करने के बाद नकारात्मक में जाएंगे। यानी पहले हम देखेंगे कि इसके यूनानी शब्द के क्या अर्थ है और फिर विचार करेंगे कि इसका क्या अर्थ है।

दीनता/नम्रता का क्या अर्थ है? ''दीन'' या ''नम्र'' शब्द का अनुवाद *praus* से किया गया है। जोसेफ हेनरी के शब्दों में *praus* की परिभाषा ''शरीफ, नरम, विनम्र'' के रूप में है।[2] यूनानी दार्शनिक अरस्तु (384–322 ई.पू.) ने कहा कि *praus* ''बुरे स्वभाव'' और ''दुर्बल अक्षमता'' के मध्य में यानी ''अति क्रोध और उदासीनता के बीच'' की केन्द्रीय भूमि है।[3] ह्यूगो मेकोर्ड ने लिखा:

> [*Praus*] का इस्तेमाल जानकारों के लिए *किए* जाने पर यूनानियों का अभिप्राय पालन होता था। पर के शब्द का इस्तेमाल करने पर उसका अभिप्राय मधुर और कोमल होता था। व्यक्तियों के लिए इसके इस्तेमाल पर उनके कहने का अर्थ नम्र और दीन होता था।[4]

Praus पर अपनी चर्चा का आरम्भ हम नम्रता की आवश्यकता पर ध्यान दिलाने से करते हैं। मसीही लोगों के लिए ''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो'' (कुलुस्सियों 3:12)। सुसमाचार बताते और खोए हुओं को बचाने का प्रयास करते हुए हमें ऐसा ''हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो'' (गलातियों 6:1; देखें 2 तीमुथियुस 2:25; 1 पतरस 3:15) करना होगा। ''नम्रता'' का अनुवाद *praus* के रूप में किया गया है। इसके लिए एक शब्द ''gentleman'' या ''भद्रपुरुष'' जो अमेरिका में अपना पूरा अर्थ ही खो चुका है। आज इस शब्द का इस्तेमाल मुख्यतया पुरुष और स्त्री में अन्तर करने के लिए किया जाता है, पर किसी समय इसका इस्तेमाल केवल पुरुषों के लिए होता था, जो दूसरों के साथ सचमुच भद्र ढंग से पेश आता था। बाइबल बताती है कि सब को भद्रपुरुष[5] और भद्र स्त्रियां होने की आवश्यकता है।

भद्र या नम्र होना *praus* के अर्थ को समझने का आरम्भ है, पर अन्त नहीं। पुराने नियम में मसीहा के सम्बन्ध में यह भविष्यवाणी दी गई थी:

> हे सियोन की बेटी बहुत ही मगन हो!
> हे यरूशलेम जयजयकार कर!
> क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा;
> वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है,
> वह *दीन* है, और गदहे पर
> वरन गदही के बच्चे पर
> चढ़ा हुआ आएगा (जकर्याह 9:9)।

यह वचन यीशु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश पर पूरा हो गया। सुसमाचार के वृत्तांत में मत्ती ने यही भविष्यवाणी दोहराई, पर ध्यान दें कि उसने ''दीन'' की जगह कौन सा शब्द इस्तेमाल किया।

> सिय्योन की बेटी से कहो,
> देख, तेरा राजा तेरे पास आता है;
> वह नम्र [*praus* से] है और गदहे पर बैठा है;
> वरन लादू के बच्चे पर (मत्ती 21:5)।

जकर्याह ने जहां ''दीन'' शब्द का इस्तेमाल किया वहीं मत्ती ने ''नम्र'' का इस्तेमाल किया है। नम्रता यानी gentleness/meekness में नम्रता की बात है। याकूब 1:21 में NASB में *praus* के संज्ञा रूप का अनुवाद दीनता के रूप में किया गया है। ''उस वचन को दीनता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया है और तुम्हारे प्राणों का उद्धार करने के योग्य है।'' डब्ल्यू. ई. वाइन ने लिखा कि ''केवल दीन मन ही नम्र भी हो सकता है''[6] और भद्र भी। जकर्याह 9:9 में ''दीनता'' की जगह KJV में ''विनीत'' है, सो मेकोर्ड ने नम्रता की परिभाषा ''दीन दरिद्रता'' के रूप में की है।[7]

Praus के सम्बन्ध में यीशु के मन में दीनता और नम्रता के गुण थे, पर हमारी समझ अभी पूरी नहीं है। *Praus* में सहमत होने, नमनशील और यहां तक कि अधीन होने के गुणा का संकेत है। ऐसे मनवाला व्यक्ति प्रभु के अधीन होने को तैयार है। वाइन ने लिखा:

> [*Praus* की अभिव्यक्तियां] प्रथम और मुख्य रूप में *परमेश्वर* के प्रति हैं। मन का यही बर्ताव है, जिसमें हम अपने साथ उसके व्यवहारों को अच्छे मानते हैं, और इस कारण बिना झगड़ा या सामना किए; यह ... परमेश्वर के साथ झगड़ता और ... संघर्ष और विवाद नहीं करता।[8]

एक यूनानी शब्दकोष का कहना है, ''[मत्ती] 5:5 में नम्र लोग, जिन्हें मीरास देने की प्रतिज्ञा दी गई है, वे लोग हैं, जो परमेश्वर की बड़ी और अनुग्रहकारी इच्छा को मान लेते हैं।''[9]

इस शृंखला में हम धन्यवचनों को तर्कसंगत रूप में से बढ़ने पर ज़ोर दे रहे हैं। कोई अपने आप को शून्य (पहला धन्य वचन) और परमेश्वर को सब कुछ मानता है। वह अपनी आत्मिक स्थिति पर शोक करता है (दूसरा धन्य वचन) जो उसके मन फिराने और परमेश्वर की ओर लौटने का कारण बनता है। फिर उसकी आत्मिक दरिद्रता और गहरा शोक दीन नम्र और अधीन होने का कारण बनता है (तीसरा धन्य वचन), जो बिना संदेह किए परमेश्वर की इच्छा मान लेता है।

ऐसा मन होना जो परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी हो, दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध के लिए भी लाभदायक है। पौलुस ने तीतुस से कहा कि मसीही लोगों को याद दिलाए कि ''वे झगड़ालू न हों: पर कोमल स्वभाव के हों [*praus* का एक रूप] और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें'' (तीतुस 3:1, 2)। दीन/नम्र मसीही अपनी इच्छा मनवाने की ज़िद नहीं करेगा। वह दूसरों की आवश्यकताओं और भावनाओं का ध्यान रखता है।

तो फिर हम मत्ती 5:5 की दीनता को नम्रता की परिभाषा कैसे दे सकते हैं? यह दीन मन है, जो परमेश्वर की इच्छा के आगे झुक जाता है और दूसरों के साथ करुणा से व्यवहार करता है।

दीनता/नम्रता क्या नहीं है। यह चर्चा कर लेने के बाद कि *praus* क्या है, हम उन कई निष्कर्षों तक पहुंचने को तैयार है कि *praus* क्या नहीं है। पहले तो यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि *praus* कमज़ोर गुण नहीं है। कई साल पहले जब अधिकतर लोग KJV का इस्तेमाल करते थे, कइयों को ''meek'' शब्द पर आश्चर्य होता था। उनके लिए meek यानी नम्र होने का अर्थ था कि कायर है और अपने आप खड़ा होने से डरता है। यानी कि वह लोगों को अपने साथ दुर्व्यवहार करने और अपना लाभ उठाने की अनुमति देता है। आधुनिक अनुवादों में NASB की तरह ''दीन'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है। पर अधिकतर अनुवाद दीन व्यक्ति को बलवान व्यक्ति के विपरीत ही देखते हैं।

याद रखें कि यूनानी लोग जानवरों को पालने की बात करने में *praus* शब्द का इस्तेमाल करते थे। जानवरों को पालने की बात सोचने पर मैं जंगली घोड़ों को सिधाने की बात करता हूं। घोड़े की सवारी के लिए सिधाने में उसकी किसी शक्ति को नष्ट नहीं किया जाता। इसके बजाय घोड़े की शक्ति को नियंत्रित किया जाता है। मत्ती 5:5 की *gentleness/meekness* (दीनता/नम्रता) को ''वश में शक्ति'' माना जा सकता है।[10] प्रभु के साथ हमारे सम्बन्ध में *praus* की

परिभाषा ''श्रद्धा से सिधाई गई सामर्थ'' के रूप में की जा सकती है।

दूसरा *praus* मन का वह व्यवहार नहीं है, जो गलत और अनैतिक होने पर भी किसी भी बात या वस्तु को सह ले। कई लोगों को इसलिए नम्र और दीन माना जाता है क्योंकि वे कभी किसी बात को टालते नहीं हैं। वे किसी भी प्रकार की नाराज़गी से बचने के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं। यह सच है कि मत्ती 5:5 के दीनता/नम्रता का संकेत उस व्यक्ति की ओर है जो शक्ति की तलाश में रहता है (देखें आयत 9), पर इसका अर्थ यह नहीं है कि वह बुराई में लिप्त है। पाप और बुराई का विरोध न कर पाना दीनता/नम्रता नहीं है। डी. मार्टिन लॉयड के अनुसार यह तो केवल ''ढीलापन'' है।[11]

तीसरा, *praus* मन की स्वाभाविक स्थिति नहीं है। यह सच है कि कई लोग स्वाभाविक रूप में नम्रता और दीनता को दिखाते हैं। इन लोगों को कई बार ''शिष्टाचारी'' कहा जाता है। *Praus* शब्द का इस्तेमाल करते हुए यीशु के मन में यह नहीं था। यीशु उस काम की वकालत कर रहा था जिसे हर मसीही को विकसित करना चाहिए, चाहे उसमें यह ''स्वाभाविक रूप में'' हो या नहीं। वह एक ऐसे गुण की बात कर रहा था जिसे बढ़ाने के लिए ईश्वरीय सहायता की आवश्यकता है। गलातियों 5:22, 23 में पौलुस ने ''आत्मा के फल की'' की बात की। फल की पौलुस की सूची में ''नम्रता'' या ''दीनता'' भी है (आयत 23)। बाइबली अर्थ में हम दीन/नम्र केवल तभी बनते हैं जब हम अपने को प्रभु के अधीन कर देते हैं। उसके आत्मा को अपने जीवनों में काम करने देते हैं।

उदाहरण

अब तक आप समझ सकते हैं *praus* एक जटिल शब्द है। इस शब्द को समझने में शायद हमें सहायता मिल जाए यदि हम इसके बाइबली उदाहरणों को देख लें। वचन में कई उदाहरण मिल सकते हैं,[12] परन्तु हम दो उदाहरणों पर ही ध्यान देंगे, जिनमें एक पुराने नियम में हैं और एक नये नियम में।[13]

पुराने नियम में गिनती 12:3 में हम पढ़ते हैं ''मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।'' KJV में है ''अब मूसा पृथ्वी पर रहने वाले सब लोगों से बढ़कर बहुत ही नम्र था।'' पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में इस वचन में मूसा के वर्णन के लिए *praus* के एक रूप का इस्तेमाल किया गया है।

जो कुछ आप मूसा के विषय में जानते हैं उस पर विचार करें। वह जीवित लोगों सबसे नम्र था, पर क्या वह कमज़ोर था? क्या कोई कमज़ोर आदमी मिस्र में से बीस से तीस लाख लोगों को निकालकर ले जा सकता था। मूसा नम्र और दीन था पर मुझे याद है कि कई अवसरों पर उसका क्रोध भड़का था।[14] मुझे नहीं लगता था कि नम्रता उसका *स्वाभाविक* स्वभाव था। तौ भी उसमें वह गुण थे जिसकी हमने चर्चा की है। उसने अपने मन को परमेश्वर के मन के आगे झुका दिया था और दूसरों के साथ उसके व्यवहार को इसी ने प्रभावित किया था। परमेश्वर आज्ञा न मानने वालों का विरोध करने पर वह दीन या नम्र नहीं था, पर फिर भी उसकी पहचान नम्रता से हुई।

मूसा के जीवन के दो उदाहरण काफी होने चाहिए। गिनती 11 अध्याय में एक जवान मूसा को यह बताने के लिए भागा कि दो जन छावनी में भविष्यवाणी कर रहे हैं (आयतें 26, 27)।

कोई घमण्डी अगुवा होता तो विरोध कर सकता था ''उन्हें किसने अनुमति दे दी?'' यहोशू ने कहा कि ''हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे'' (आयत 28)। मूसा ने विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया ''क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता!'' (आयत 29)।

अध्याय 12 में (वह अध्याय जिसमें हम मूसा की दीनता/नम्रता के बारे में पढ़ते हैं) मरियम और हारून ने अपने भाई के विषय में कठोर बातें कहीं (आयतें 1, 2)। यहोवा ने दोनों को डांटा (आयतें 4-9) और मरियम को दंड दिया, जो स्पष्टतया आलोचना करने वालों की अगुआई करने वाली थी[15] (आयत 10)। यदि मैं मूसा की जगह होता तो शायद कहता, ''इससे बढ़कर वह हकदार नहीं है'' इसके विपरीत उसने अपनी बहन के लिए प्रार्थना कि ''हे ईश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर'' (आयत 13)। आश्चर्य की बात नहीं कि मूसा ऐसा अगुआ था।

नये नियम में आने पर हम दीनता/नम्रता के सबसे बड़े उदाहरण यीशु मसीह को देखते हैं। पहले मत्ती 21:5 में हम पढ़ते हैं जो मसीहा को ''नम्र'' (*praus*) के रूप में दिखाता है। 2 कुरिन्थियों 10:1 में पौलुस ने ''मसीह की नम्रता [*praus* से] और कोमलता'' की बात की। यीशु ने स्वयं कहा, ''मैं नम्र [*praus*] और मन में दीन हूं'' (मत्ती 11:29)। क्या यीशु कमज़ोर था? मन्दिर में पैसे का कारोबार करने वालों पर विचार करें जो उसके रास्ते से हटने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे हैं (यूहन्ना 2:13-17)। क्या यीशु बुराई के प्रति सहनशील था? क या वह हर कीमत पर असुविधा से बचा? मत्ती 23 अध्याय में फरीसियों को उसकी कठोर डांट पर विचार करें।

यीशु को ''दीन'' या ''नम्र'' क्यों बताया गया? उसने पूरी तरह से अपनी इच्छा को पिता की इच्छा का सौंप दिया था (यूहन्ना 6:38; देखें मत्ती 26:39)। उसने अपने आप को ईश्वरीय अधिकारों और उन विशेषाधिकारों से खाली कर लिया था और परमेश्वर और मनुष्य जाति का सेवक बन गया था (देखें फिलिप्पियों 2:5-8)। उसे अपनी चिन्ता नहीं थी बल्कि दूसरों का ध्यान था (देखें मत्ती 20:28)। इसलिए वह खोए हुओं के साथ व्यवहार करने में दीन था। उसे ''पापियों का मित्र!'' माना जाता था (मत्ती 11:19)।

यीशु को नम्रता और दीनता का एक चौंकाने वाला उदाहरण यूहन्ना 8:1-11 में मिलता है।[16] शास्त्री और फरीसी यीशु को फंसाने की कोशिश में उसके पास एक व्यभिचारिणी स्त्री को ले आए।[17] उनके जाल से निकलने और उस पर आरोप लगाने वालों के वहां से निकल जाने के बाद उसने स्त्री से पूछा ''क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?'' तब यीशु ने नम्रता से कहा, ''मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता'' (आयतें 10, 11)। यीशु मज़बूत था पर उसकी सामर्थ नियंत्रित थी। इसे परमेश्वर के लिए श्रद्धा और लोगों के लिए प्रेम से ढाला गया था। मत्ती 5:5 की gentleness/meekness (दीनता/नम्रता) यही तो है।

''... क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।''

यीशु ने कहा कि जिनमें ये खूबियां हैं, वे ''धन्य'' हैं। उनके पास अतिरिक्त प्रसन्नता है। प्रसन्नता का दीनता/नम्रता से क्या सम्बन्ध है? पिछले धन्य वचनों की तरह ही यह गुण भी सचमुच में प्रसन्न होने के लिए सहायक है-क्योंकि दीन/नम्र व्यक्ति अपने बजाय दूसरों की

आवश्यकताओं पर अधिक विचार कर रहा है। इसलिए संसार के अधिकतर लोगों के विपरीत अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वह दूसरों की नाकामियों पर नाराज़गी से नहीं भरता। परन्तु एक बार फिर हमारे वचन पाठ में ज़ोर प्रतिज्ञा से मिलने वाल खुशी पर है।

मत्ती 5:5 वाली प्रतिज्ञा कि ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, *क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे*'' चौंकाने वाली है। इसका क्या अर्थ है ? दीन/नम्र लोग ''पृथ्वी के अधिकारी'' किस अर्थ में होंगे।

प्रतिज्ञा का अर्थ क्या नहीं है

इस प्रतिज्ञा का अर्थ यह *नहीं* है कि जो लोग दीन और नम्र हैं वे कानूनी अर्थ में पृथ्वी के अधिकारी होंगे। मूसा और यीशु के जिन उदाहरणों पर हमने चर्चा की है, उन पर ध्यान दें। मेकोर्ड ने लिखा है:

> यदि किसी को लगता हो कि यीशु के मन में यही पृथ्वी थी तो अब तब तक तो सबसे नम्र व्यक्ति को यह प्रतिज्ञा नहीं मिली। प्रतिज्ञा के देश में जाने की उम्मीद से मूसा चालीस साल तक बेकार घूमता रहा, पर उसे इसको केवल देखना ही नसीब हुआ [व्यवस्थाविवरण 34:1-5]। बाइबल हमें बताती है कि यीशु भी नम्र व्यक्ति था और शाब्दिक रूप में इस पृथ्वी की विरासत पाने से बहुत दूर था [यीशु ने] कहा, ''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं'' [देखें लूका 9:58; KJV]।[18]

तौ भी मेरी फाइलों में ऐसे पत्र और लेख हैं, जिनमें लोग दावा करते हैं कि मसीही लोग एक दिन सांसारिक पृथ्वी के कानूनी तौर पर हकदार होंगे। उनका पसन्दीदा वचन मत्ती 5:5 है ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।'' उदाहरण के लिए प्रिमिलेनियलिस्ट (यानी हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले) लोग हैं, जो इस प्रतिज्ञा को अन्तिम समय के अपने दृश्य में जोड़ लेते हैं। वे कहते हैं कि यीशु पृथ्वी पर वापस आएगा और एक हज़ार वर्ष तक शारीरिक रूप में राज करेगा। वे ज़ोर देते हैं कि उस दौरान परमेश्वर की सन्तान को पृथ्वी का अधिकार यानी मीरास दी जाएगी।

फिर ऐसे भी हैं जो सिखाते हैं कि केवल 1,44,000 ही स्वर्ग में जाएंगे, जबकि परमेश्वर के शेष लोग सदा के लिए पृथ्वी पर रहेंगे। इस विचार को मानने वाले दो जन एक दिन मेरे घर आ गए। उन्होंने पाप और दुष्टता से शुद्ध की गई पृथ्वी यानी ऐसी पृथ्वी का वर्णन किया, जिसमें कोई बीमारी और मृत्यु नहीं होगी। ऐसी पृथ्वी जो प्रसन्नता से भरी है। ''क्या यह रोमांचक नहीं है ?'' उन्होंने पूछा ''वास्तव में यह परेशान करने वाला है।'' मेरा उत्तर था। मैं तो एक *नये* आकाश और *नई* पृथ्वी की राह देख रहा हूं [2 पतरस 3:13; देखें प्रकाशितवाक्य 21:1] और आप पैबन्द लगी, मरम्मत की गई पृथ्वी की प्रतिज्ञा बता रहे हैं। बच्चा भी बता सकता है कि पैबन्द लगे कपड़े और नये कपड़े में अन्तर होता है।

बाइबल यह नहीं सिखाती कि दीन और नम्र लोगों को अब कानूनी तौर पर पृथ्वी का अधिकार मिलेगा; और न इसके हकदार हो जाएंगे। पतरस ने लिखा, ''प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, *और पृथ्वी और उस पर*

के काम जल जाएंगे'' (2 पतरस 3:10)।

प्रतिज्ञा का अर्थ क्या है

तो फिर प्रतिज्ञा का अर्थ क्या है? किस अर्थ में नम्र और दीन लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे? पहले अध्ययन में की गई प्रतिज्ञाओं की तरह, यह प्रतिज्ञा भी शारीरिक नहीं बल्कि *आत्मिक* है। यीशु के चेलों को यह उम्मीद थी कि मसीहा कोई सैनिक अगुवा होगा जो पृथ्वी पर विजय पाएगा और इसे उन्हें इस पर शासन करने के लिए देगा। यीशु ने उन उम्मीदों पर पानी फेर दिया, जब उसने कहा, ''मेरा राज्य यहां का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)।

परन्तु यदि हम मान भी लें कि यह प्रतिज्ञा आत्मिक है, फिर भी यह सवाल रहता है कि हमारे वचन पाठ में ''पृथ्वी'' का सम्बन्ध इस जीवन या आने वाले जीवन से अवश्य है। कई लोग ज़ोर देते हैं कि यह प्रतिज्ञा केवल इस जीवन के लिए है। अन्य उतनी ही मज़बूती से ज़ोर देते हैं कि यह आने वाले जीवन की बात करता होगा। मैं फिर से ज़ोर देना चाहता हूं कि इस प्रतिज्ञा का पूरा होना दोहरा है यानी आंशिक रूप में इस जीवन में पूरा होना और पूर्ण रूप में आने वाले जीवन में पूरा होना है।

इस जीवन में। पुराने नियम में मूल रूप में दाऊद ने उसी भाषा का इस्तेमाल किया, जिसका इस्तेमाल मत्ती 5:5 में यीशु ने किया: ''धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।'' KJV में इस आयत के पहले भाग, ''परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (भजन संहिता 37:11) की तीसरे धन्य वचन से समानता और भी चौंकाने वाली है। भजन संहिता 37 अध्याय में नम्र/दीन लोग वे हैं, जो प्रभु में भरोसा रखते हैं (आयत 3) और धीरज से उसके दुष्टों को दण्ड देने की प्रतिज्ञा करते हैं (आयतें 7–9)। परन्तु हमारे लिए सबसे बड़ी दिलचस्पी का विषय ''भूमि'' [NASB] या ''पृथ्वी'' [KJV] शब्द है। भजन संहिता में भूमि/पृथ्वी कनान देश के रूप में प्रसिद्ध भौगोलिक क्षेत्र को कहा गया है। दाऊद ने ज़ोर दिया कि उस देश की आशिषों का आनन्द केवल दीन और नम्र लोग ही ले पाएंगे। इसी प्रकार मेरा मानना है कि केवल दीन और नम्र लोग ही हैं जो इस वर्तमान पृथ्वी की पूरी आशिषों का आनन्द ले सकते हैं।

दीन और नम्र मसीही ही ''पूर्ण, सम्पूर्ण और सबसे सन्तुष्टिजनक जीवन की मीरास के अर्थ में, जो यह पृथ्वी दे सकती है'' पृथ्वी के अधिकारी होंगे।[19] पौलुस ने ऐसे जीवन की बात की जब उसने अपने आपको ''ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं'' कहा (2 कुरिन्थियों 6:10)। उसने कुरिन्थियों को आवश्वासन दिया:

> ... क्योंकि *सब कुछ तुम्हारा है*। क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, *क्या जगत,* क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, *सब कुछ तुम्हारा है,* और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है (1 कुरिन्थियों 3:21–23)।

''इस संसार की सभी उपयोगी वस्तुएं नम्र लोगों की सम्पत्ति हैं। वे कानूनी तौर पर हो सकता है कि भूमि का एक इंच भी उनका न हो, पर वे समझते हैं कि सारी पृथ्वी यहोवा की है और इसकी सारी सुन्दरता और शान उन्हीं को आनन्द देने के लिए है।''[20]

पहली बार धन्य वचनों पर वचन सुनाने से थोड़ा पहले कौमांक, ओक्लाहोमा की कलीसिया के सदस्य ज्यूल थॉमस के जनाजे से होकर आया था। वह एक नम्र व्यक्ति अर्थात किसान था। उसका जनाज़ा स्पेशियस हाई स्कूल के ऑडिटोरियम में हुआ। सीटें भरी हुई थी और लोग दीवारों के पास खड़ें थे। आराधना में पढ़ा जाने वाला एक वचन पाठ मत्ती 5:5 था ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (KJV)। पहली बार मेरे लिए उस वचन का विशेष अर्थ लगा था। भाई थॉमस अमीर नहीं थे पर उन्हें पूरे समुदाय के सम्मान सहित इस जीवन की सच्ची आशिषें मिली थी। जॉर्ज मैक्डोनल्ड ने लिखा है,

> संसार में अधिक सम्पत्ति का स्वामी कौन है–वह जिसके हज़ारों घर है, या वह, जिसका कहने को काई अपना घर नहीं है, पर दस घर है, जिनमें वह खटखटाए तो तुरन्त लोग उसकी आवाज़ पर निकल आएं? धनवान कौन है, वह जिसके पास खर्च करने को ढेर सारा धन है, पर कोई सहारा नहीं या वह जिसकी आवश्यकता पूरी करने के लिए सैकडों लोग बलिदान करने से पीछे न हटे?[21]

हम में से अधिकतर लोग सम्भवतया बड़े धनवानों को जानते हैं कि जिनकी स्थिति दयनीय होती है और उनको भी जिनके पास धन हो या न हो पर वे खुश रहते हैं। सम्पत्ति की बहुतायत हमें खुश नहीं करती, बल्कि जीवन के प्रति हमारा व्यवहार हमें प्रसन्न करता है। डॉन हम्फरी ने लिखा है कि ''आशिषों का सच्चा आनन्द उन्हीं को मिलता है, जो सांसारिक वस्तुओं को लापरवाही से लेते हैं, यानी जो उन्हें आत्मिक आशिषों से कम मानते हैं।'' उसने लिखा कि नम्र व्यक्ति अपनी सम्पत्ति के दबाव में नहीं आता और उसके खो जाने के भय से नाश नहीं होता।[22]

आने वाले जीवन में। यह पृथ्वी दीन और नम्र लोगों को जो सबसे बेहतरीन दे सकती है उस पर और बात की जा सकती है, पर हम अपना ध्यान आने वाले जीवन पर लगाते हैं। सभी धन्य वचनों की तरह इस प्रतिज्ञा का अन्तिम रूप में पूरा होना स्वर्ग में ही होगा। इब्रानियों 11 में हम विश्वास के नायकों की बात पढ़ते हैं:

> ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं ...। पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, सो उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है (आयतें 13–16)।

दो अध्यायों के बाद, लेखक ने लिखा, ''क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहने वाला नगर [यानी स्वर्ग में] नहीं, वरन हम एक अपने वाले नगर की खोज में हैं'' (13:14; देखें प्रकाशितवाक्य 21:2, 10)।

रोमियों 8 में पौलुस ने हमारी आत्मिक विरासत के बारे में लिखा। उसने लिखा कि हम ''परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं'' (आयत 17)। उसने इस बात को समझा कि इस जीवन की हमारी आशिषें दुखों के साथ मिली जुली रहेंगे, जिस कारण उसने अपने वाले जीवन की ओर आगे

को देखा। उसने कहा, ''क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (आयत 18)। अपने जीवन के अन्त के निकट पहुंचने पर उसने लिखा, ''और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करने पहुंचाएगा: उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (2 तीमुथियुस 4:18)।

''पृथ्वी के अधिकारी'' होने की प्रतिज्ञा का अन्तिम और पूर्ण रूप में पूरा होना ''*नये* आकाश और *नयी* पृथ्वी'' में होगा (प्रकाशितवाक्य 21:1; देखें 2 पतरस 3:13)। जो स्वर्ग में परमेश्वर का निवास स्थान है। जो हमें होना चाहिए वह बनने की कोशिश करने के लिए इससे बड़ा सहायक कोई नहीं हो सकता।

सारांश

''धन्य हैं वे, जो नम्र [या दीन] हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (मत्ती 5:5)। क्या आप पृथ्वी के ''अधिकारी'' होना चाहते हैं यानी उन बेहतरीन चीज़ों का आनन्द लेना चाहते हैं जो यह पृथ्वी देती है *और* उस ''नई पृथ्वी'' की राह देखना चाहते हैं? तो आपको दीन और नम्र होना पड़ेगा।

याद रखें कि नम्रता और दीन होने में धीमा बोलना और दूसरों के प्रति दयालू होना ही काफ़ी नहीं है। कई लोग धन्य वचनों में इसे सबसे कठिन मानते हैं क्योंकि इसमें परमेश्वर की इच्छा के आगे पूर्णतया समर्पित होना शामिल है। घमण्डी व्यक्ति परमेश्वर से कहता है, ''मुझे तेरी आवश्यकता नहीं और न मुझे तेरे ढंग की आवश्यकता है।'' नम्र/दीन व्यक्ति कहता है, ''हे परमेश्वर मैं अपनी कमज़ोरी को मानता हूं और मुझे समझ है कि मेरे पास तुझे देने के योग्य कुछ नहीं है; पर मैं धन्यवाद करता हूं कि तू ने मुझ से प्रेम किया, अपने पुत्र को मेरे लिए मरने के लिए दे दिया और फिर उद्धार का मार्ग साफ़ किया। अब मैं विनम्रतापूर्वक तेरी इच्छा को मानता हूं'' यदि आप परमेश्वर की संतान नहीं हैं, या आप अविश्वासी संतान हैं, तो आज ही प्रभु के पास आकर अपनी दीनता को दिखाएं।

टिप्पणियां

[1]NASB में ''नम्र/दीन'' के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद आम तौर पर ''जैंटल'' हुआ है। पर इस संस्करण में कई बार इस शब्द का रूप ''दीनता'' भी है (देखें 2 कुरिन्थियों 10:1)। [2]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 534. [3]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ दि न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिच से लिया गया; अनु. ज योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 930. [4]ह्यूगो मेकोर्ड, *हैप्पीनेस गारंटीड* (मरफ्रीस्बोरो, टेनिसी: डिहॉफ पब्लिकेशंस, 1956), 23. [5]''भद्र पुरुषों'' की बात सोचते हुए मेरे मन में मसीही भद्रपुरुष ह्यूगो मेकोर्ड आता है। [6]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 401. [7]मेकोर्ड, 23-24. [8]वाइन, 401. [9]ब्रोमिले, 930. [10]ऐसी ही एक व्याख्या विलियम बार्कले, *दि गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* अंक 1, दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 91-

92 में दी गई है।

[11]डी. मार्टिन लॉयड-जोन्स, *स्टडीज़ इन दि सरमन्स ऑन द माउंट,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 67. [12]लेखकों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले अन्य उदाहरणों में यिर्मयाह, दाऊद, पतरस, स्तिफनुस और पौलुस हैं। [13]नम्रता पर अधिकतर सरमनों में उनका अधिकतर समय मूसा, मसीह जैसे अन्य बाइबल के उदाहरणों पर लगता है। आप इस भाग को विस्तार दे सकते हैं। [14]मूसा ने एक मिसरी अधिकारी को मार डाला था, पत्थर की पट्टियों का पहला सेट तोड़ डाला था। बोलने के बजाय उसे मारा था। [15]ध्यान दें कि गिनती 12:1 में पहले मरियम का नाम। हारून आम तौर पर पीछे चलने वाला होता था। [16]यह वचन कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं मिलता। इसलिए इसे NASB के अनुवादकों ने कोष्टों में रखा। परन्तु अधिकतर लोग मानते हैं कि यह घटना ऐसे ही घटी जैसे लिखी गई। [17]आपको चाहिए कि पूरी कहानी बताने के लिए समय दें। [18]मेकोर्ड, 26. [19]जो शुबर्ट, ''दि मीक,'' *रिसोर्सिस* 2 (1981): 13. [20]जेम्स एम. टोल्ले, *दि बीटीच्यूडस* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: टोले पब्लिकेशंस, 1966), 42.

[21]टोले, 43 में उद्धृत। [22]डॉन हम्फ्रे, *दि बीटीच्यूडस* (बर्लिंग्टन, मैसाचुएटस: इटरनिटी प्रैस, 1969), 31.